कथा दर्पण

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र पोवार

कथा दर्पण

[रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेळगावी (कर्नाटक) के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार
बी.कॉम के लिए पठित पुस्तक)]

B.Com. AECC (Ability Enhancement Compulsory Course)

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र पोवार

हिन्दी विभागाध्यक्ष

आरपीडी कला तथा वाणिज्य महाविद्यालय, बेळगावी (कर्नाटक)

सहयोगी सम्पादक

डॉ. डी.एम. मुल्ला

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, मराठा मंडळ कला तथा वाणिज्य महाविद्यालय, खानापुर

प्रो. ए.एम. सिद्दीकी

हिन्दी विभाग, अंजुमन कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, विजयपूर

प्रो. एफ.भी. नाय्कर

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, सरकारी प्रथम दर्जा महाविद्यालय, खानापुर

लोकभारती प्रकाशन

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग
प्रयागराज-211 001
वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com
शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

पहला संस्करण : 2021 | **मूल्य :** ₹70

© सर्वाधिकार सुरक्षित

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

KATHA DARPAN
Edited by Dr. Rajendra Powar, Dr. D.M. Mulla,
Prof. A.M. Siddigi, Prof. F.B. Naikar

ISBN : 978-93-92186-00-4

क्रम

भूमिका 7

प्रेमचन्द **9**
सद्गति 12
यशपाल **19**
सच बोलने की भूल 22
भीष्म साहनी **30**
शिष्टाचार 32
उषा प्रियम्वदा **37**
वापसी 39
ममता कालिया **48**
मुखौटा 50
ओमप्रकाश वाल्मीकि **58**
पच्चीस चौका डेढ़ सौ 61
तेजेन्द्र शर्मा **69**
ईंटों का जंगल 72
मृदुला गर्ग **79**
मीरा नाची 81

संक्षेपण 90
समानार्थी शब्द (पर्यायवाची शब्द) 99
विपरीतार्थक शब्द (विलोम शब्द) 101
अनेकार्थक शब्द 103

भूमिका

हिन्दी में कहानी, गद्य साहित्य की हमेशा से ही सबसे लोकप्रिय मनोरंजक व शिक्षाप्रद विधा रही है। कहानी साहित्य की वह गद्य रचना है जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना प्रधान हृदयस्पर्शी एवं सुरुचिपूर्ण कथात्मक वर्णन होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में हर पल में किसी-न-किसी कहानी को जीता रहता है और जब वह किसी कहानी में स्वयं के जीवन के किसी-न-किसी पक्ष के कथानक को पाता है तो कहानी के अधिक निकट हो जाता है। जनमानस में कहानी विधा की लोकप्रियता यह भी एक कारण है। कहानी मानव जीवन का वह खंड चित्र है जिसकी कोई सीमा रेखा नहीं और जिसमें किसी एक पक्ष की अनिवार्यता नहीं। कहानी में मानव जीवन के किसी एक पक्ष का मनोहारी चित्रण किया जाता है। किसी एक प्रभाव को उत्पन्न करना ही कहानी का उद्देश्य रहता है।

हिन्दी के लेखकों में प्रेमचन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने तीन लेखों में कहानी के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए हैं : "कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथाविन्यास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण तथा वृहत् रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के फूल बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।" और अज्ञेय के अनुसार—"कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है। एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती।" हिन्दी, संस्कृत और अन्य साहित्य में कहानी के विकास को जानने के लिए पौराणिक आख्यानों, जातक कथाओं, पंचतंत्र और हितोपदेश को जानना होगा।

रचना और प्रकार की दृष्टि से देखें कहानी के छह तत्त्वों—कथावस्तु, संवाद, चरित्र चित्रण, देशकाल वातावरण, भाषाशैली और उद्देश्य से निबद्ध

कहानियों में ऐतिहासिक, सामाजिक मनोवैज्ञानिक, साहसिक, रोमांटिक, जासूसी, पौराणिक आदि प्रकार की कहानियाँ देखने को मिलती हैं। शैक्षिक आधार पर भी छात्रों को गद्य कि इस विधा का पठन-पाठन अत्यन्त आवश्यक है। बिना इस विधा का अध्ययन किए छात्र सम्पूर्ण गद्य साहित्य को नहीं जान पाएगा जोकि उसके लिए हिन्दी साहित्य और विशेषकर गद्य के अध्ययन की परिपूर्णता के लिए नितान्त जरूरी है, अध्ययन में इसी विषय पूर्ति की आवश्यकता को देखते हुए हिन्दी के दिग्गज और मूर्धन्य कहानीकारों की कहानियों का यह संकलन 'कथा दर्पण' नाम से प्रस्तुत है।

आधुनिक कहानी के पितामह कहे जानेवाले कहानीकार उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द से लेकर यशपाल, भीष्म साहनी, उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया, ओमप्रकाश वाल्मीकि, तेजेन्द्र शर्मा और मृदुला गर्ग जैसे विलक्षण और समृद्ध लेखनी के धनी कहानीकारों की रचनाएँ इसमें शामिल की गई हैं। कहानियों के चयन में रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगावी, कर्नाटक में बी.कॉम/बी.बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्रों को स्वीकृत सीबीसीएस पाठ्यक्रम को तो ध्यान में रखा ही गया है, साथ ही यह भी देखा गया है कि छात्र कहानी की लेखन शैली कथानक विषयवस्तु से अपने विषय की सम्पूर्णता को प्राप्त करें और साथ ही कहानियों के चरित्रों के माध्यम से वे समाज की व्यापकता के भिन्न-भिन्न रंगों से परिचित हों। छात्र अध्ययन के समय इन कहानियों में निहित एक सार्थक सन्देश भी पाएँगे और अपने जीवन व चरित्र की उच्चता को प्राप्त करेंगे ऐसा हमें विश्वास है। कहानियों के साथ-साथ 'कथा-दर्पण' में संक्षेपण, समानार्थी शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेकार्थक शब्दों के अध्याय भी जोड़े गए हैं जिससे छात्र लेखन शैली में संक्षेपिका और शब्द ज्ञान को पुष्ट कर सकें।

कोरोना के संक्रमण काल के दौरान इस संकलन का सम्पादन कार्य बहुत से सहयोगियों की सहायता से ही पूरा हो पाया है, उन सभी को बहुत धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इस संकलन को पाठ्यपुस्तक का स्वरूप प्रदान करनेवाले राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली को अनेकानेक साधुवाद और आभार जिनका छात्रहित में हमेशा ये प्रयास रहता है कि छात्रों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हों ताकि छात्र कम मूल्य की पुस्तकों में भी अपने शैक्षिक ज्ञान के साथ हिन्दी के विराट रचना संसार की झलक देखें और हिन्दी पर गौरव करें। हिन्दी के आलोचक और सुधीजन भी इस संकलन पर अपनी प्रतिक्रिया दें ताकि भविष्य में हम इस संकलन का त्रुटिरहित परिवर्धित संस्करण प्रस्तुत कर सकें। आशा है, छात्र इस 'कथा दर्पण' में हिन्दी कहानी का सार्थक प्रतिबिम्ब देखेंगे।

—सम्पादक

आवरण परिकल्पना : लोकभारती स्टूडियो

लोकभारती प्रकाशन

कहानी

₹70

9 789392 186004